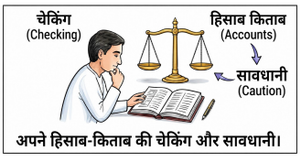
"मीठे बच्चे - दुनिया में भल और किसी का डर नहीं रखो लेकिन इस बाप का डर जरूर रखो, डर रखना माना पाप कर्मों से बचे रहना"



**प्रश्नः- बाबा हर एक बच्चे को अपनी जांच करने (चार्ट रखने) की श्रीमत क्यों देते हैं?**

**उत्तरः-** क्योंकि ईश्वरीय कायदे बड़े कड़े हैं। अगर ब्राह्मण बनकर छोटी-मोटी भूलें होती तो बहुत कड़ी सज़ा खानी पड़ेगी, इसलिए बाबा कहते अपनी जांच रखो। अगर कोई भी पुराना हिसाब-किताब रह गया तो मानी और मोचरा खाना पड़ेगा। अब कयामत का समय बहुत नजदीक है इसलिए अपने सब हिसाब-किताब योगबल से चुक्तू करो।



अपने हिसाब-किताब की चेकिंग और सावधानी।



याद से विकर्म विनाश।





**ओम् शान्ति।** बाप की याद में तो बच्चे आपेही रहते हैं। घड़ी घड़ी कहने की भी दरकार नहीं रहती। बाप का डायरेक्शन है कि चलते-फिरते, उठते-बैठते बाप को याद करो तो रावण जिसने तुमको पतित बना दिया है, उन पर जीत पा लेंगे। तुमको कोई हथियार आदि नहीं देते, सिर्फ योगबल से तुम रावण पर जीत पाते हो। जीत पानी है जरूर और संगम पर ही पाते हो, जबकि रावण राज्य खत्म हो रामराज्य की स्थापना होनी है। बाप हिंसा तो कभी सिखला न सकें। देवताओं का है ही अहिंसा परमोधर्म। दुनिया यह नहीं जानती कि वहाँ काम कटारी की हिंसा होती नहीं। **जो कल्प पहले निर्विकारी बने होंगे वही तुम्हारी बातों को मानेंगे।** अभी तुम युद्ध के मैदान में हो। गाया भी हुआ है शिव शक्ति सेना। तुम हो गुप्त वारियर्स, हर एक अपने लिए कर रहे हैं। **माया जीत जगतजीत बनना है।** तुम अपने लिए करते हो, गोया अपने भारत देश के लिए करते हो। इसमें जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करते हैं वह पाते हैं। जो 5 विकारों पर जीत पायेंगे वही जगतजीत बनेंगे और कोई चीज़ पर जीत पानी नहीं है। तुम्हारा है ही रावण राज्य पर जीत पाना अर्थात् दैवीगुण धारण करना। सिवाए











ये तो पक्का कर लो..

ये पक्का समझ लो..








**दैवीगुण धारण किये सतयुग में जा नहीं सकते।** तो अपने से पूछना है कि कहाँ तक हमने दैवीगुण धारण किये हैं? दैवीगुण धारण करना माना रावण पर जीत पाना। कहते हैं रामराज्य था तो एक राम ने तो राज्य नहीं किया होगा? प्रजा भी तो होगी। यहाँ राजा, रानी तथा प्रजा सब रावण पर जीत पा रहे हैं। दैवीगुण धारण कर रहे हैं। दैवीगुणों में खान-पान, बोलना करना सब शुद्ध पवित्र होता है। हर बात में सच बताना है। बाप है ही सत्य। तो **ऐसे बाप के साथ कितना सच्चा बनना चाहिए।** अगर **सच्चे नहीं बनेंगे तो कितनी बुरी गति होगी।** गति तो ऊंच पानी चाहिए। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनना है। कहा भी जाता है - तुम्हरी गति मत तुम ही जानो। बाप जो मत देते, उससे कितनी ऊंच गति होती है।





तुम मात पिता हम बारिक तेरे।
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे।
तुम मात पिता हम बारिक तेरे.....

तू ठाकुर... तुम पहि अरदासि।
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ।

तुम मात पिता हम बारिक तेरे।
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे।
तुम मात पिता हम बारिक तेरे।

कोई न जानै तुमरा अंतु।
उचे ते ऊचा भगवंत ।

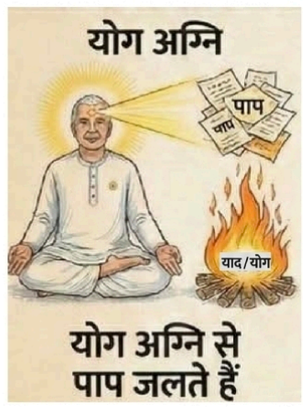
तुम मात पिता हम बारिक तेरे।
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे।
तुम मात पिता हम बारिक तेरे।

सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी।
तुम ते होई सु आगिआकारी।

तुम मात पिता हम बारिक तेरे।
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे।
तुम मात पिता हम बारिक तेरे।

तुमरी गति मिति तुम ही जानी।
नानक दास सदा कुरबानी।

तुम मात पिता हम बारिक तेरे।
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे।
तुम मात पिता हम बारिक तेरे।




ऊंचे ते ऊंचा बाप ऊंचे से ऊंची गति प्राप्त कराते हैं। तो अब श्रीमत पर चलकर दैवीगुण धारण करने हैं। **जन्म-जन्मान्तर के पाप योगबल बिना कट नहीं सकते** इसके लिए याद की यात्रा बड़ी अच्छी चाहिए। याद अच्छी रहेगी अमृतवेले। उस समय वायुमण्डल अच्छा होता है। **दिन में भल कितना समय भी बैठो, परन्तु** अमृतवेले जैसा समय नहीं है।




Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

समझा?






constantly 24x7 (in Every Single Thought)

अपनी बातें गुप्त हैं। अंग्रेजी में कहते हैं **"वी आर एट वार"** हमारी युद्ध है रावण के साथ। यह है नम्बरवन दुश्मन। राम सम्प्रदाय ने रावण सम्प्रदाय पर जीत पाई है श्रीमत से। बाप सर्वशक्तिमान् है ना। दुनिया तो बिचारी इस समय घोर अन्धियारे में है। उनको मालूम ही नहीं कि हमने हार खाई है। **माया से हारे हार है**, माया किसको कहा जाता है यह भी कोई नहीं जानता है। सारी लंका पर रावण का राज्य था। शास्त्रों में भक्ति मार्ग की कितनी दन्त कथायें लिख दी हैं, जो जन्म-जन्मान्तर पढ़ी हैं। अब भी कहते हैं शास्त्र तो जरूर पढ़ने चाहिए, जो नहीं पढ़ते उनको नास्तिक कहा जाता है और **बाप कहते हैं, तुम यह सब पढ़ते-पढ़ते नास्तिक बन पड़े हो।** यह बातें बच्चों को अच्छी तरह समझानी चाहिए कि भारत जब सतोप्रधान था तो उसको स्वर्ग कहा जाता था। वही भारतवासी 84 जन्म लेते-लेते अब पतित तमोप्रधान बने हैं। अब फिर पावन कैसे बनें। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सतोप्रधान पावन बन जायेंगे, और कोई






Question:



Answer:



Points ...न = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धा... Green = सेवा









भी देहधारी को याद नहीं करो। किसको गुरू नहीं बनाओ। कहा जाता है गुरू बिना घोर अन्धियारा। ढेर के ढेर गुरू हैं। परन्तु सब अन्धियारे में ले जाने वाले हैं। बाप कहते हैं - **ज्ञान सूर्य जब आये तब घोर अन्धियारा दूर हो।** संन्यासी भल पावन बनते हैं परन्तु जन्म तो विकार से लेते हैं ना। देवी-देवता तो विकार से पैदा नहीं होते। यहाँ सबके शरीर मूत पलीती हैं। बाप ऐसे मूत पलीती कपड़े साफ करते हैं। आत्मा पवित्र बने फिर शरीर भी अच्छा मिले। उसके लिए पुरुषार्थ करना है। अपनी जांच रखनी है- मेरे से कोई बुरा काम तो नहीं होता है। ईश्वरीय कायदे भी कड़े हैं। कोई बुरा काम करे तो उनकी सजा बहुत कड़ी है। कयामत का समय है। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना है- योगबल से। अगर चुक्तू नहीं किया तो मोचरा खाना पड़ेगा। फिर कहा भी जाता है - मोचरा और मानी। **मानी तो (रोटी तो) सबको मिलनी है।** मुक्ति और जीवनमुक्ति की मानी सबको देंगे। कोई पास विद् ऑनर, कोई को **मोचरा मिलेगा फिर थोड़ी मानी मिलेगी, बेइज्जती से।** तख्त पर तो वह बैठ न सकें। कोई भी बुरा काम किया तो बेइज्जती होगी, सो भी बाप के आगे। शिवबाबा बैठे



ज्ञान और योग







Attention Please..!

समझा?

Refer last pages

हैं ना। तुमको साक्षात्कार करायेंगे कि "हम इसमें था, तुमको कितना समझाते थे। अभी मैं सम्पूर्ण (ब्रह्मा) में हूँ।" तुम बच्चियाँ सम्पूर्ण बाबा के पास जाती हो। उस द्वारा शिवबाबा डायरेक्शन आदि देते हैं ना। तुमको बाबा साक्षात्कार करायेगा कि "इसमें बैठकर तुमको कितना पढ़ाते थे, समझाते थे कि दैवीगुण धारण करो, सर्विस करो। किसी की निंदा नहीं करो। तुमने फिर भी यह काम किये," **अब खाओ सजा**। जितने-जितने पाप किये होंगे तो सजा खानी पड़ेगी। कोई बहुत सजायें खाते हैं, कोई कम। उनमें भी नम्बरवार हैं, जितना हो सके योगबल से विकर्मों को काटते रहना है। यह बड़े ते बड़ा फुरना बच्चों को रखना है कि हम सम्पूर्ण पक्का सोना कैसे बनें? उठते बैठते यही बुद्धि में रहे, जितना याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। माया के तूफानों की परवाह नहीं करनी है, जितना समय मिले As much as Possible बाप को याद करना है। मुझे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप को याद करेंगे तो पाप कट जायेंगे। कोई पाप भी नहीं करना चाहिए। नहीं तो सौगुणा बन जायेगा। माफी नहीं ली तो फिर वृद्धि को पाते-पाते सत्यानाश







समझा?

हो जाती है। पाप पिछाड़ी पाप माया कराती रहेगी। बेहद के बाप से बे-अदबी हो जाती है। यह भी बहुतों को पता नहीं पड़ता है। बाबा हमेशा समझाते हैं **ऐसे समझो कि शिवबाबा मुरली चलाते हैं।** शिवबाबा डायरेक्शन देते हैं तो याद भी रहे, डर भी रहे। बहुत पाप करते रहते हैं। साफ बोलना चाहिए कि बाबा हमसे यह भूल हुई। बाप समझाते हैं पापों का बोझा सिर पर बहुत है। जो कुछ किया है वह बताओ। सच बताने से आधा कम हो जायेगा।







श्रीभगवानुवाच Adhyay : 4
**बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।**
**तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप॥**
श्रीभगवान् बोले—हे परंतप अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता, किन्तु मैं जानता हूँ॥ ५॥

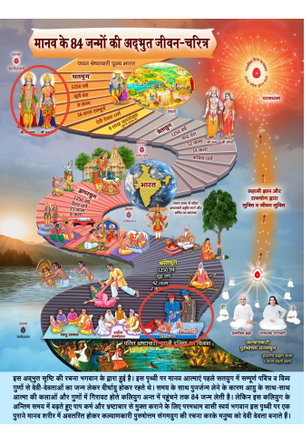
बाबा ने समझाया है जो नम्बरवन पुण्य आत्मा बनते हैं, वही फिर पाप आत्मा भी नम्बरवन बनते हैं। बाबा खुद कहते हैं -तुम्हारा बहुत जन्मों के भी अन्त का जन्म है। तुम पुण्य आत्मा **थे**, सो अब पाप आत्मा **बने हो** फिर पुण्य आत्मा **बनना है**। अपना कल्याण तो करना है। यहाँ तुम्हें माथा आदि टेकने की भी दरकार नहीं है, सिर्फ बाप को याद करना है। भल यह भी बुजुर्ग है, नमस्ते करते हैं। बच्चे घर में घड़ी घड़ी थोड़ेही नमस्ते करते हैं। एक बार नमस्ते किया




नाज उठाते हमें बिठाते, आप तो अपने कंधों पर
याद-प्यार दे करते नमस्ते, बली-बली जाते बच्चों पर
ऐसे प्यार का मधुरस पी के, सब रस लगते फीके हैं
मीठे बच्चे मीठे बच्चे बोल ये कितने मीठे है
मीठा हमे बनाते बाबा, आप बड़े ही मीठे है



फिर रेसपान्ड में भी किया जाता है। बाप कहते हैं- तुम मुझे बड़ा समझकर नमस्ते करते हो, मैं फिर तुमको विश्व का मालिक समझ नमस्ते करता हूँ। How humble my baba is...! अर्थ है ना। मनुष्य तो राम-राम कह देते हैं परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। वास्तव में राम अर्थात् शिवबाबा। राम वह रघुपति नहीं, यह राम निराकार है। उनका नाम है शिवबाबा। शिव के आगे कोई ऐसा नहीं कहेगा कि मैं राम की पूजा करता हूँ। अब बाप कहते हैं तुम मन्दिरों में जाकर समझाओ कि यह भी मनुष्य थे। तुम इन्हों के आगे जाकर महिमा गाते हो - आप निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, हम पापी नीच हैं। यह तन भी मनुष्य का है और वह तन भी मनुष्य का है लेकिन उसमें दैवीगुण हैं इसलिए देवता है। तुम खुद कहते हो हमारे में आसुरी गुण हैं इसलिए बन्दर हैं।




सूरत दोनों की एक है। सीरत में फ़र्क है। भारतवासी ही सिरताज थे। अभी नो ताज, गरीब भी भारतवासी ही हैं। बाप भी भारत में ही आते हैं, **जहाँ स्वर्ग बनाना है वहाँ बाप आयेगा ना।** कहा जाता है कलंगी अवतार, कितने कलंक लगाये हैं। अगर और धर्म वाले भी कुछ कहते हैं, वह भी भारतवासियों को फालो करते हैं। पत्थरबुद्धि होने के कारण मुझे भी






पत्थर-भित्तर में कह देते हैं। बाप को जानते ही नहीं कि बाप इसमें प्रवेश कर भारत को कितना सिरताज बनाते हैं। भारत की कितनी सेवा करते हैं। बाप कहते हैं मेरी तुम ग्लानि करते हो। मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। तुम कितना अपकार करते हो। रावण ने तुम्हारी मत कितनी मार डाली है। बुरी गति हो गई है, तब बुलाते हैं पतित-पावन आओ। समझानी कितनी सहज मिलती है। फिर भी कई बच्चे भूल जाते हैं। योग नहीं तो धारणा भी नहीं होती है इसलिए बाबा कहते हैं बांधेलियाँ सबसे जास्ती याद करती हैं। शिवबाबा की याद में सहन भी करती हैं। भारतवासियों में जो देवी-देवता बनने वाले हैं वही यहाँ आयेंगे। आर्य समाजी तो देवताओं की मूर्तियों को मानते ही नहीं। झाड़ के पिछाड़ी में टाली है, 2-3 जन्म भी मुश्किल होंगे।

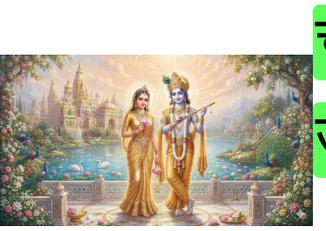



ये पक्का समझ लो..






बहुत लोग समझते हैं - विकार बिना दुनिया कैसे चलेगी। अरे देवताओं को सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता है ना। यह भी किसको पता नहीं कि वहाँ



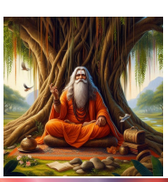





विकार होता ही नहीं है। कल्प पहले वाले झट समझ जाते हैं। गायन भी है; भगवानुवाच काम महाशत्रु है। परन्तु भगवान ने कब कहा था यह किसको पता नहीं है। अभी तुम बच्चे जगतजीत बन रहे हो। परन्तु ऊंच पद पाने के लिए मेहनत करनी है। बाप कहते हैं - गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ बुद्धियोग मेरे से लगाओ। जबकि बाप के बन गये हो तो बाप से लव होना चाहिए। बाकी औरों के साथ काम निकालने के लिए प्यार रखना है। बुद्धि में यह ख्याल रखना है कि बिचारों को स्वर्गवासी कैसे बनायें। सच्ची यात्रा पर चलने की युक्ति बतायें। वह है जिस्मानी यात्रा, जो जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं। यह एक ही याद की यात्रा है। अभी हमारे 84 जन्म पूरे हुए फिर सतयुग की हिस्ट्री रिपीट होनी है। पतित तो घर जा नहीं सकते। पावन बनाने के लिए पतित-पावन बाप चाहिए। भल संन्यासी पावन बनते हैं परन्तु वापिस जा नहीं सकते। सबको ले जाने वाला बाप ही है। बाप आकर सबको रावण से छुड़ाए मुक्त कर देते हैं। सतयुग में दुःख देने वाली कोई चीज़ होती नहीं। नाम ही है सुखधाम। यह है दुःखधाम। वह क्षीरसागर, यह है विषय सागर।

M.M.M.....imp.





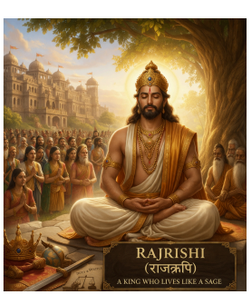





अभी तुम जानते हो स्वर्ग में कितने सुख आराम से रहते हैं। क्षीर सागर से निकल विषय सागर में कैसे आते हैं, यह कोई नहीं जानते। बाप समझाते हैं **श्रीमत पर चलना है** फिर जवाबदार वह है। श्रीमत कहती है हाँ भल जाओ, बच्चों को सम्भालो। उनको भू-भू करते रहो, तो कुछ न कुछ कल्याण हो जायेगा। स्वर्ग में तो आ जायेंगे। बाप आकर नर्कवासी से स्वर्गवासी बनाते हैं 21 जन्म के लिए।




यह भी तुम्हारी बुद्धि में है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। यह भी पहले कुछ नहीं जानते थे। जैसे इनके 84 जन्मों की कहानी है "तत्त्वम्" यह भी राजयोग सीख रहे हैं। **तुम हो राजऋषि**। वह हैं हठयोग ऋषि। तुम गृहस्थ व्यवहार में रहकर राजाई प्राप्त कर रहे हो। तुम सब शरणागति होने आये हो ना। अब समझते हैं हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। दुनिया में है माया का पाम्प। जब तक नर्क का विनाश न हो तब तक स्वर्ग कैसे हो सकता है। मायावी पुरुष इसको ही स्वर्ग समझ बैठे हैं। बाबा को नई दुनिया









स्थापन करने में कितनी मेहनत लगती है। पूरे नर्कवासी हैं। स्वर्गवासी बनते ही नहीं हैं। बाप कितना प्यार से समझाते हैं। अच्छा !

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

With Extreme love & care . .



मीठे-मीठे बच्चों रावण पर जीत पाने से ही तुम जगतजीत बनेंगे। उसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना है।




अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

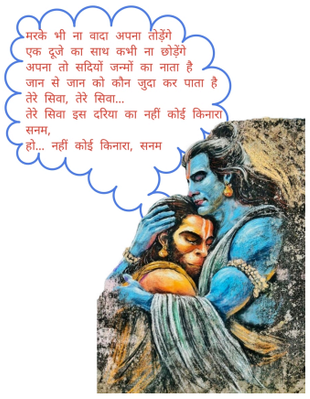


# धारणा के लिए मुख्य सारः-

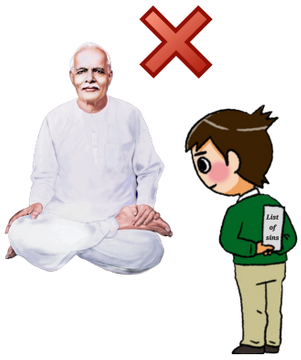


1) ऐसा कोई काम नहीं करना है जो बेइज्जती हो। सजायें खानी पड़ें। माया के तूफानों की परवाह न कर जितना समय मिले बाप को याद करना है। एक बाप से सच्चा-सच्चा लव रखना है।



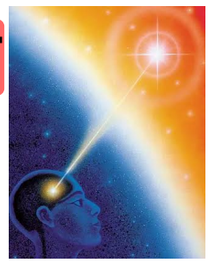

2) अपनी ऊंच गति बनाने के लिए सच्चे बाप से सच्चा रहना है। कोई भी बात छिपानी नहीं है।

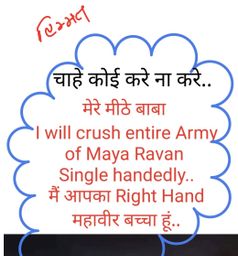




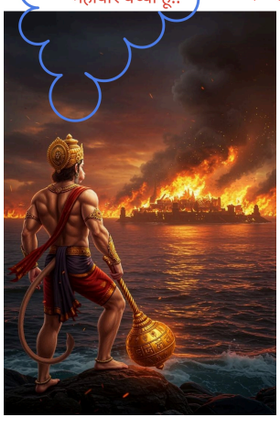


**वरदानः-** सर्व जिम्मेवारियों के बोझ बाप को देकर सदा अपनी उन्नति करने वाले सहजयोगी भव







जो बच्चे बाप के कार्य को सम्पन्न करने की जिम्मेवारी का संकल्प लेते हैं उन्हें बाप भी इतना ही सहयोग देते हैं।




सिर्फ जो भी व्यर्थ का बोझ है वह बाप के ऊपर छोड़ दो। बाप का बनकर बाप के ऊपर जिम्मेवारियों का बोझ छोड़ने से सफलता भी ज्यादा और उन्नति भी सहज होगी।











क्यों और क्या के क्वेश्चन से मुक्त रहो, विशेष फुलस्टॉप की स्थिति रहे तो सहजयोगी बन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते रहेंगे।





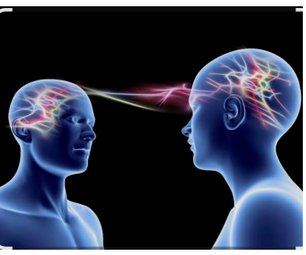
**स्लोगनः-** दिल और दिमाग में ऑनेस्टी हो तो बाप वा परिवार के विश्वास पात्र बन जायेंगे।

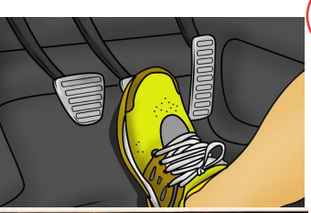
# ये अव्यक्त इशारे -

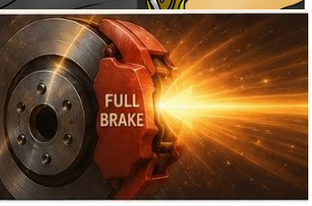



## ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो



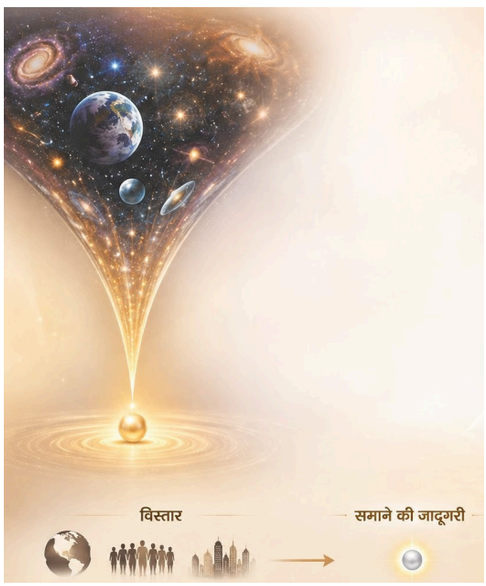







जितना सम्पूर्ण स्टेज समीप आती जायेगी उतना दूसरों के संकल्पों को रीड कर सकेंगे, इसके लिए अपने संकल्पों के ऊपर फुल ब्रेक चाहिए।

जो अपने संकल्पों को समेट सकते हैं वही दूसरों के संकल्पों को समझ सकते हैं। तो संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो।






*If you wish to stay connected, Here is the link*










BKdrluhar

Mind Mapping is Available Here

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click

**मन मत**

# माया वास्तव में क्या है और कैसे माया को समझ सकते हैं व उसे जीत सकते हैं?

मीठे बाबा की श्रीमत है की "बच्चे विचार सागर मंथन करो"
SM:30/5/2026

Click




माया को अगर सबसे सरल रीति समझना है तो एक कंप्यूटर प्रोग्रामर जो कि कंप्यूटर की कोडिंग करता है जिसे हम software या Application भी कहते है
और उस कोडिंग को चलाने/Run करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी चाहिए तो इन तीनों से माया को ऊपर ऊपर से समझ सकते हैं

इस बेहद सृष्टि नाटक में सभी आत्माएं चैतन्य एक्टर्स है मीठे ब्रह्मा बाबा इस सारी सृष्टि का coding(नियम सूची) करने वाले वह प्रोग्रामर है इसी कारण से शास्त्रों में ब्रह्मा बाबा को श्रृष्टि के रचयिता या जगत पिता कहा गया है
साथ ही जो यह कोडिंग होती है उसको चलाने/रन करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी अर्थात ऊर्जा चाहिए वह मिलती है शिव बाबा से
और इसी कारण से शिव बाबा हमेशा ही ड्रामा के बाहर रहते हैं जो की ब्रह्मा बाबा के द्वारा किए हुए coding को निरंतर ऊर्जा प्रदान करते रहते हैं और इसीलिए भक्ति मार्ग में शास्त्रों में परमात्मा को सर्वव्यापी कहा है क्योंकि जैसे किसी सॉफ्टवेयर या प्रोग्रामिंग में इलेक्ट्रिसिटी निरन्तर फ्लो होगी तभी वह प्रोग्राम रन करेगा उसी प्रकार यह सारी सृष्टि जो है उसमें शिव बाबा की ऊर्जा प्रवाहित होती है तो इसी कारण से उन्होंने शिव बाबा को सर्वव्यापी कह दिया है
असूल में/एक्चुअल में शिव बाबा सर्वव्यापी नहीं है किंतु उनकी ऊर्जा सारी सृष्टि में व्याप्त/सर्व व्यापी है और निरंतर/constant है

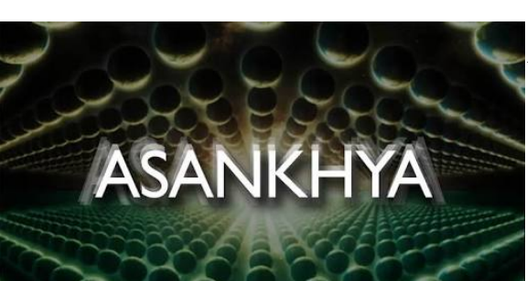


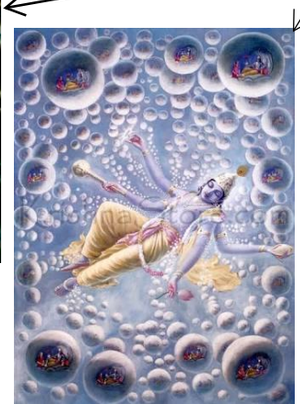

यह माया जो है वह अनंत है
इसको ऐसे समझो:-
1 के बाद 2 आएगा 3 आएगा 4 आएगा उसको आप आगे से आगे लिखते जाओ
लाख, 10 लाख, करोड़, 10 करोड़, अरब, 10 अरब और उससे भी आगे आपको जहां तक गिनती आती हो .....
आपको गिनती आना खत्म हो जाएगा लेकिन नंबर तो उससे भी आगे चलता ही जाएगा अर्थात हमें उस फिगर/अंकों का मूल्य क्या बोलना है वह नहीं मालूम होगा लेकिन वो मूल्य अपना अस्तित्व जरूर रखेगा और वह मूल्य आगे से आगे बढ़ता ही चला जाएगा अनंत तक/♾️ To the Infinity तो इस ही प्रकार से माया भी अनंत है

कोई भी माना कोई भी अपने आप से/अपने बल बूते पर इस माया को पार नहीं कर सकता वह फिर चाहे मीठे ब्रह्मा बाबा-The creator खुद ही क्यों ना हो ,
जिन्होंने खुद (शिव बाबा के मार्गदर्शन में) इस ड्रामा को रचा - वह खुद भी ड्रामा में श्री कृष्ण बन कर आने से लेकर 84 वे जन्म में जब तक स्वयं शिव बाबा ने उनके तन में प्रवेश नहीं किया तब तक माया को पार नहीं कर सकते

अब सोचो स्वयं ब्रह्मा बाबा(creator) भी शिव बाबा की श्रीमत के बिना उस अनंत माया को जीत नहीं सकते तो हम किस खेत की मूली है जो दूसरी अपूर्ण ब्राह्मण आत्माओं को फॉलो करके माया को जीत सकेंगे...?

और एक अति सूक्ष्म बात यह है की
जिस प्रकार कोई वस्तु महासागर के बीच में डूबी हुई होती है तो उसके चारों तरफ जैसे पानी उस वस्तु को घेरे हुए होता है उसी प्रकार माया हमारे चारों तरफ सर्वव्यापी है और हम आत्माएं अभी माया के राज्य में रहते हैं तो हमारे हर एक संकल्प भी हमें गिराने और चढ़ाने के निमित बनते हैं अर्थात सारा खेल संकल्पों पर है। Every Single Thought is in Account.
जो संकल्प बाप दादा की श्रीमद् के विपरीत किया तो वह भी आत्मा को गिराने के निमित्त बन जाता है, ऐसा नहीं सोचना है कि एक संकल्प ही तो किया है ना इसमें क्या हुआ, किंतु नहीं। हर एक संकल्प account में लिया जा रहा है और उसके परिणाम(अच्छा व बुरा)भी भोगने की हमे तैयारी रखनी पड़ेगी
और वाणी और कर्म जो है वह तो बहुत बहुत बहुत बड़ी बात हो जाती है जो अगर हमने श्रीमत के विपरीत ऐसा कोई कर्म कर लिया तो वह हमें कर्म बंधनों में ऐसा तो फंसा देते है की जिससे बाहर निकलना भी कई बार मुश्किल हो जाता है(और फिर ज्ञान से भी कई बार आउट हो जाते हैं जो फिर बाहर जाकर बाबा की और इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बुराई करने में लग जाते हैं जिससे वो और ही नीचे गिर जाते है जिसको बाबा "रसातल में चले जाना" कहते है) इसलिए मीठे बाबा कहते हैं की "सभी सब्जेक्ट में फूल पास होना है तो गंभीरता के गुण को धारण करो(ममा के जैसे)" - गंभीरता हमारे लिए एक कवच का काम करती है, जिससे वाचा और कर्मणा में हम बच जाते है और फिर फोकस सिर्फ संकल्पों का रहता है।






एक्चुअल में जो मीठे बाबा ने बताये है वही तीन लोक है इससे ज्यादा कुछ नहीं
लेकिन आप इसको ऐसे समझे कि programmer के पास जो कंप्यूटर है वह अनलिमिटेड स्टोरेज वाला सुपर कंप्यूटर या quantum computer है तो उसमें असंख्य एप्लीकेशन या सॉफ्टवेयर ऐड करके रन करा सकते है ( इसलिए मीठे अव्यक्त बापदादा कई बार कहते हैं कि बच्चे आप पुरुषार्थ तो करो बाबा आपके लिए माला में लड़ियां लगा देगा।क्यों कहते हैं ऐसा क्योंकि बाबा के पास unlimited शक्तियां है - वह जो चाहे वह कर सकते हैं)
ठीक वैसे ही इसे भक्ति मार्ग में यह असंख्य ब्रह्मांड(multi verse या कहो कि वर्चुअल वर्ल्ड) दिखाएं है(उदाहरण: आजकल face book वाले Meta Verse create कर रहे है जो virtual world है) वो multi verse और कुछ नहीं है वो सिर्फ मीठे ब्रह्मा बाबा के संकल्प की रचना है जिसमें जो मुक्ति में रहने वाली आत्माएं है उन हर एक के लिए पूरी की पूरी virtual/आभासी दुनिया बना दी है (Real/सच्चा खेल तो इस साकार श्रृष्टि पर ही खेला जाएगा)- आखिर भी ब्रह्मा बाबा है तो सारी सृष्टि के पिता - जगत पिता ही ना, चाहे कोई उन्हें पिता माने या ना माने लेकिन पिता हमेशा पिता ही होता है, जो बच्चों पर हमेशा रहम दिल होता है चाहे वह सपूत हो या कपूत। और इसीलिए शिव बाबा को भक्ति में अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक भी कहते हैं क्योंकि यह जो मल्टीवर्स है उस एक एक ब्रह्मांड में मुक्ति वाली एक एक आत्माएं रहती है और उन सब के मालिक है शिव बाबा।




भक्ति मार्ग में इसीलिए गाते भी है कि
"चाहे अमीर हो चाहे गरीब हो उनको एक समान, सबकी बिगड़ी वो ही बनाये हम सब के भगवान्, मेरे भोले के दरबार में सबका खाता है।"

तो मीठे बाबा सभी आत्माओं को जो Reward/सुख देता है वह 100% ही मिले वैसा करते हैं (वो सुप्रीम न्याय कर्ता जो है) - इसको हम अपनी अल्पज्ञ बुद्धि चलाने से कभी भी नहीं समझ सकते हैं
इसको अगर जानना है तो सबसे पहले अपनी अल्पज्ञ बुद्धि के द्वारा भगवान के सामने तर्क करने के, सारे दरवाजे जो है उसको बंद करने पड़ेंगे ।
मीठे बाप दादा जो बुद्धि वानो की बुद्धि है वह जो कहते हैं उसको ब्लाइंड्ली फॉलो करना पड़ेगा (भगवान के सामने एक संकल्प मात्र का भी तर्क नहीं। सदैव हाँ बाबा, हाजिर बाबा, अभी बाबा - बस इतना ही -That's All) जब उनकी दृष्टि से सारे ड्रामा को देखेंगे तो सहज सब कुछ देखने में आ जाएगा।

हाँ, इसमें इतना जरूर है कि जिन आत्माओं ने इस संगम युग पर भगवान की श्रीमत पर माया को बापदादा की मदद से अपने बलबूते पर जीता है वह चारों ही युगों में सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाएंगे।

# Bible - Gospel of Matthew 20:16 की कहानी

यीशु मसीह ने एक दृष्टांत (parable) सुनाया जिसे “अंगूर के बाग के मजदूरों का दृष्टांत” कहा जाता है।

कहानी

एक ज़मीन का मालिक सुबह-सुबह अपने अंगूर के बाग में काम करने के लिए मजदूरों को बुलाने गया। उसने उनसे एक दिन की मजदूरी तय की।
फिर वह दिन में कई बार बाहर गया:
सुबह 9 बजे
दोपहर 12 बजे
3 बजे
और यहाँ तक कि शाम 5 बजे भी
हर बार उसने और मजदूरों को काम पर रखा और कहा कि उन्हें उचित मजदूरी दी जाएगी।

मजदूरी देने का समय
शाम को मालिक ने सबको मजदूरी देनी शुरू की।

आश्चर्य की बात यह थी कि:
जो मजदूर केवल एक घंटा काम किए थे, उन्हें भी पूरा दिन का पैसा मिला।
और जिन्होंने सुबह से पूरा दिन मेहनत की थी, उन्हें भी उतना ही मिला।
↑ That is by their efforts/मेहनत

यह देखकर पहले वाले मजदूर शिकायत करने लगे:
“हमने ज़्यादा मेहनत की, फिर भी हमें बराबर पैसा मिला!”

लेकिन मालिक ने कहा:
“मैंने तुम्हारे साथ अन्याय नहीं किया। मैंने वही दिया जो तय हुआ था। अगर मैं दूसरों पर दया और उदारता दिखाना चाहता हूँ, तो इसमें गलत क्या है?”

फिर यीशु ने कहा:
“इस प्रकार जो पीछे हैं वे पहले होंगे, और जो पहले हैं वे पीछे होंगे।” (“So the last will be first, and the first will be last.”)

इस कहानी का अर्थ
यीशु सिखाना चाहते थे कि:
परमेश्वर सब पर अपनी कृपा करता है।
परमेश्वर इंसानों की तरह ऊँच-नीच नहीं देखता।
घमंड और तुलना करना गलत है।
जो लोग दुनिया में छोटे या पीछे माने जाते हैं, परमेश्वर की नज़र में वे महान हो सकते हैं।

मुख्य शिक्षा
परमेश्वर का प्रेम और कृपा केवल मेहनत, पद या समय पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी दया और अनुग्रह पर आधारित होती है।

इस कहानी में जो बताया है की ईश्वर या परमात्मा ने सबको एक समान दिया - यह तो बिल्कुल सही है

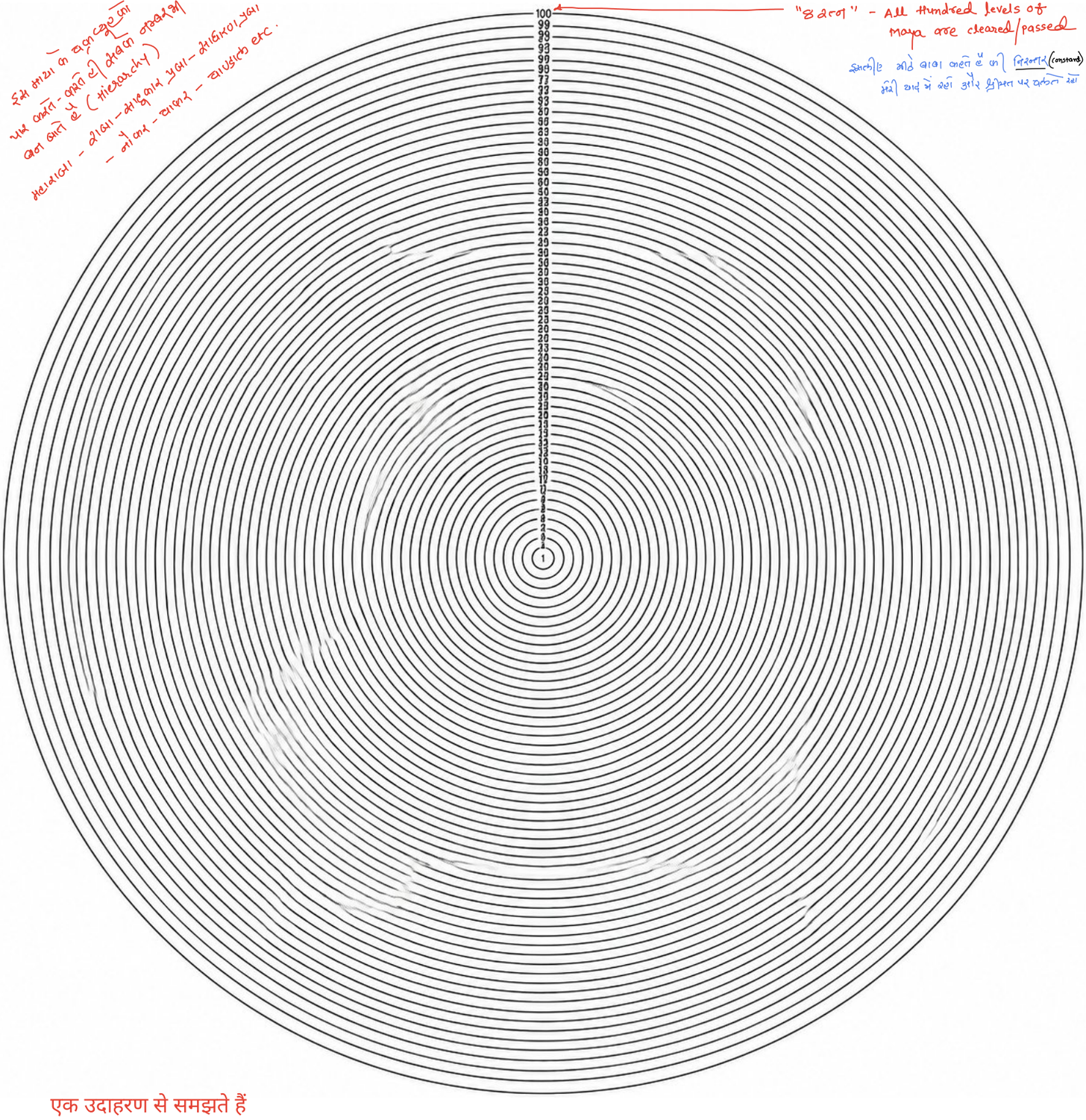
मानी तो (रोटी तो) सबको मिलनी है।
आज की मुरली ★★★

परंतु ये सिर्फ एक ही पहलू पर बात हुई..
लेकिन इसमें जो सबसे बड़ी Missing Link है वह यह है की
जो सुबह से आए, जिन्होंने मेहनत किया(अर्थात शिव बाबा से श्रीमत लेकर उनके दिखाए गए मार्ग पर त्याग,तपस्या और पुरुषार्थ किया) और मुआवजा प्राप्त किया वह चारों युगों में हमेशा के लिए आगे रहते हैं (golden spoon in mouth) क्योंकि उन्होंने बाबा की मदद से पुरुषार्थ/मेहनत से माया पर जीत पा कर उस मुआवजे को अर्जित किया है न कि मार या रहम से..

और जो पीछे से आए हैं(अर्थात इस संगम युग पर जिन्होंको बाबा एवं बाबा की श्रीमत नहीं मिली है - जिसे मीठे बाबा मुक्ति का वर्सा कहते है) उन्होंने माया को जीता नहीं है सिर्फ इतना ही नहीं उनको तो भगवान क्या और माया क्या है वो भी पता नहीं है तो उनको सजा के बल से(जिसे बाबा कहते है "मोचरा और मानी" - मार खाकर रोटी को पाना) इक्वल मुआवजा मिलेगा

दूसरे शब्दों में, इस संगम पर पूरे कल्प के लिए श्रृष्टि की hierarchy बनती है कि कौन राजा बनेगा और कौन प्रजा..

एक और अति सूक्ष्म बात यहां रख रहे हैं इसको सिर्फ हम बाबा की याद से ही समझ सकते हैं
वह यह है की, अंत में एक्चुअल में बाबा धर्मराज के द्वारा सजा नहीं देते अपितु बाबा उस समय भी रहम दिल होके आत्मा को ऊर्जा देते हैं माया के बाकी रहे हुए चक्रव्यूह से निकलने के लिए
जिस आत्मा ने चक्रव्यूह को पार नहीं किया वह आत्मा जब धर्मराज की ऊर्जा से चक्रव्यूह से बाहर निकलती है तो उसे अति कष्ट या पीड़ा अनुभव होती है जिसको ही लोगों ने कह दिया है कि धर्मराज ने सजा दी..
परंतु वास्तव में वह सजा नहीं है, वह तो रहम ही है
पीड़ा तो इसलिए होती है क्योंकि उस आत्मा ने (बाबा की श्रीमत अनुसार) अपने पुरुषार्थ के बल से उस चक्रव्यूह को पार नहीं किया।




एक उदाहरण से समझते हैं

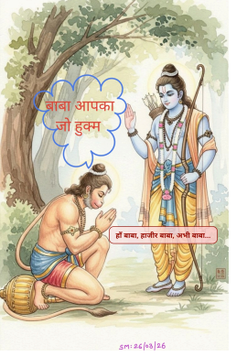
सिर्फ समझने के लिए यहां माया के चक्रव्यूह को 100 सर्कल के रूप में दिखाया हैं
जिसमें जो आत्मा इन 100 सर्कल को(बाबा की श्रीमत के आधार पर अपने पुरुषार्थ से) पार कर लेगी वह pass with honours होगी। जिसे बाबा अष्ट रत्न कहते हैं। जिन आत्माओं को धर्मराज भी झुक कर सलाम करेगा।

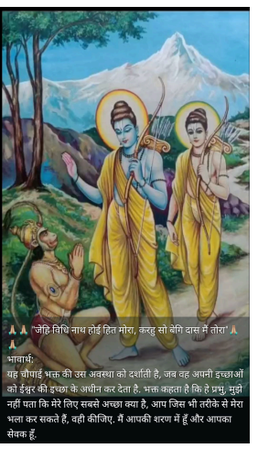
अब एक उदाहरण से समझो,
जो 108 की माला के बाकी के 100 है उन्होंने 99 चक्रव्यूह को पार किया और एक चक्रव्यूह रह गया तो....
उस एक चक्रव्यूह को पार करने के लिए धर्मराज उनको ऊर्जा देगा और उस ऊर्जा से वह एक चक्रव्यूह को पार करेंगे तो जो एक चक्रव्यूह को धर्मराज की ऊर्जा से उन्होंने पार किया (यह जो सीन होगा वह कुछ ऐसा होगा जैसे कि कोई उनको उस चक्रव्यूह से घसीट कर बाहर निकाल रहा हो) तो इस कारण से उनको उस समय अत्यंत पीड़ा अनुभव होगी जिसे बाबा ने मुरली में कहा है की बाकी के जो 100 है उनको भी कुछ सटके अवश्य पड़ेंगे क्योंकि उन्होंने वो 100वा चक्रव्यूह अपने पुरुषार्थ से नहीं किंतु धर्मराज की ऊर्जा/मदद से पार किया है और वह 100वा चक्रव्यूह उन आत्माओं के लिए कल्प कल्पांतर के लिए Unknown ही रह जाएगा इसीलिए बाबा कहते हैं कि अगर अभी पुरुषार्थ नहीं किया तो कल्प कल्पांतर के लिए प्राप्ति से वंचित हो जाएंगे।

इसी प्रकार सभी आत्माओ के लिए समझ सकते हैं
जैसे किसी ने 30 चक्रव्यूह पार किए हैं तो उनको 70 चक्रव्यूह को धर्मराज की ऊर्जा की मदद से पार करना होगा(यह जो सीन होगा वह कुछ ऐसा होगा जैसे कि कोई उनको उस 70 चक्रव्यूह से घसीट कर बाहर निकाल रहा हो) जो उन्हें सजा का अनुभव कराएंगे

फिर से दोहराते है, वास्तव में बाबा धर्मराज के द्वारा यह भी रहम ही कर रहे हैं परंतु जैसे आगे बताया वैसे इस किस्सेमें चक्रव्यूह को पार करते समय एक second में अनेक वर्षों की उन्हें पीड़ा का अनुभव होगा जिसको शास्त्रों में/गरुड़ पुराण में या और और सभी धर्मों के धर्म शास्त्रोंमें धर्मराज या उन धर्मों के अनुसार जो भी नाम दिया है उनकी सजा के रूप में वर्णित करेंगे द्वापर से...

# माया को कैसे जाने...?





"जेहि विधि नाथ होई हित मोरा, करहु सो बेगि दास मैं तोरा"।
भावार्थ:
यह चौपाई भक्त की उस अवस्था को दर्शाती है, जब वह अपनी इच्छाओं को ईश्वर की इच्छा के अधीन कर देता है. भक्त कहता है कि हे प्रभु, मुझे नहीं पता कि मेरे लिए सबसे अच्छा क्या है, आप जिस भी तरीके से मेरा भला कर सकते हैं, वही कीजिए. मैं आपकी शरण में हूँ और आपका सेवक हूँ.

गीता के 7वें अध्याय के 14 श्लोक में यह संपूर्ण स्पष्ट रीति बताया है कि अगर त्रिगुणी माना सतो रजो तमो गुण से निर्मित माया को जानना है तो हमें परमात्मा अर्थात शिव बाबा की शरण में संपूर्ण समर्पण होकर चलना होगा - ये एकमात्र उपाय है

कोई भी मनुष्य आत्मा को अपना आधार नहीं बनाना है।

यह बात कुछ हद तक ठीक है कि जब तक हम ज्ञान में नये होते है तो हमें निश्चय इतना पक्का नहीं होता है तो सिर्फ तब तक हम किसी के क्लास सुने या किसी से ज्ञान योग के लिए कुछ हद तक मदद ले मन मत

लेकिन अगर हमें माया को संपूर्ण रीति जानना है एवं उसके सामने विजयी होना है तो हमारा आधार सिर्फ और सिर्फ शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा और मम्मा यह तीन ही होने चाहिए - इससे आगे कोई भी माना कोई भी नहीं

# दूसरे किसी को भी क्यों फॉलो नहीं करना है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय - 7

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है।
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

हे भारत! तू सब प्रकारसे उस परमेश्वरकी ही शरणमें* जा। उस परमात्माकी कृपासे ही तू परम

* लज्जा, भय, मान, बड़ाई और आसक्तिको त्यागकर एवं शरीर और संसारमें अहंता, ममतासे रहित होकर केवल एक परमात्माको ही परम आश्रय, परमगति और सर्वस्व समझना तथा अनन्यभावसे अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरन्तर भगवान्‌के नाम, गुण, प्रभाव और स्वरूपका चिन्तन करते रहना एवं भगवान्‌का भजन, स्मरण रखते हुए ही उनके आज्ञानुसार कर्तव्यकर्मोंका निःस्वार्थभावसे केवल परमेश्वरके लिये आचरण करना यह 'सब प्रकारसे परमात्माके ही शरण' होना है।

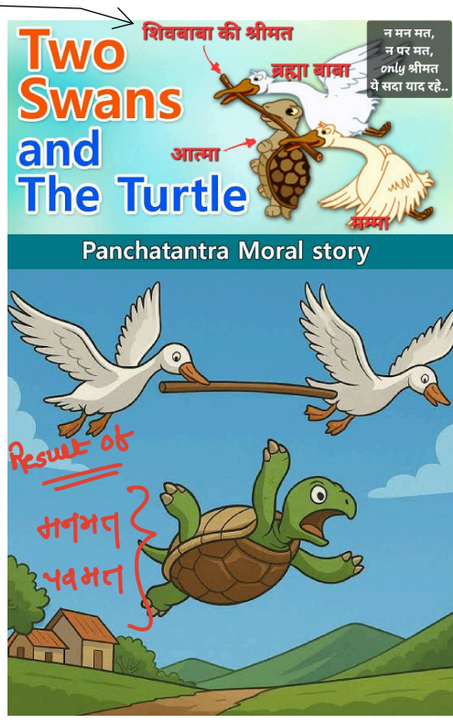
* अध्याय १८ * २३९

शान्तिको तथा सनातन परमधामको प्राप्त होगा॥ ६२॥

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

२४० * श्रीमद्भगवद्गीता *

सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मोंको मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वरकी ही शरणमें[१] आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥ ६६॥ The World Almighty's Guarantee




जो भी आत्माएं हमें माया के बारे में या किसी भी ज्ञान के राज की स्पष्टता के बारे में कुछ भी समझाएंगे उसमें कुछ ना कुछ तो त्रुटि रह ही जाएगी

अब इसमें हम दो उदाहरण लेते हैं

पहला उदाहरण:

मान लो कि एक ब्राह्मण आत्मा जिसको नाम मान शान की कोई भी इच्छा नहीं है उस को 97% या 99% मालूम पड़ चुका है की माया क्या है (100% क्यों नहीं? क्योंकि अभी कोई भी संपूर्ण नहीं बना है ब्रह्मा बाबा के सिवाय)

तो अब यह आत्मा आपको अपने सच्चे दिल से निस्वार्थ भाव से आपको जो कुछ भी समझाएगी वह ऐसा होगा जैसे की मान लो कोई 12वीं कक्षा का विद्यार्थी दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी को मैथमेटिक्स के 12 वीं कक्षा के Problems को समझाता हो जो कि उसने पहली कक्षा से लेकर 11वीं कक्षा तक को अपने बल बूते पर पार करके सब कुछ अर्जित करके अब 12वीं कक्षा में पहुंचा है(उसकी खुद की कमाई)
लेकिन वह दूसरी कक्षा का विद्यार्थी बेचारा उसको कैसे ग्रहण कर सकेगा क्योंकि उसकी बुद्धि वहां तक पहुंची ही नहीं है व पहुंच ही नहीं सकती

दूसरा कि वह जो अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा हमें समझा रही है उनकी अपूर्णता भी अर्थात उनमें जो कमी कमजोरीया है वो भी हमारे अंदर unconsciously transfer होकर घर करती जाती है - फिर उसको निकालने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी और अब हमारे पास समय है कहां....?
साथ ही जब हम उस आत्मा से सुनते हैं तो उस आत्मा की याद ना चाहते हुए भी हमको आ ही जाती है। जबकि हमारा लक्ष्य यह है कि निरंतर शिव बाबा की ही याद रहे। निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
Constant/ without any break or interruption
और सबसे बड़ी बात
जरा सोचो कि दूसरों को (अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा) फॉलो करते-करते अगर यह शरीर छोड़ना पड़े तो अंत मति सो गति क्या होगी?
हमको ऐसा लगता है कि उसमें क्या है अंत में तो हम बाबा को याद करते ही शरीर छोड़ेंगे
लेकिन नहीं, "बहुत काल का अभ्यास ही अंत में काम में आयेगा एवं अंत में किसी भी देहधारी की याद ना हो सिवाय एक बाबा के" - भगवानुवाच

तो इसीलिए एक बार थोड़ा सा भी निश्चय हो जाने के बाद हमें मुरली को ही अपना आधार बनाना है

क्योंकि मुरली पढ़ते हैं तो वह मुरली है शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का मन और उनके मन से ही तो यह संपूर्ण ब्रह्मांड/ माया क्रिएट हुई है एवं वह दोनों 100% है तो उनके द्वारा जो भी श्रीमत मिलेगी वह हमें 100% बनाएगी- रिंचक मात्र भी त्रुटि नहीं।

100 : 1 Advantage in All Aspects

इसीलिए जब हम मुरली पढ़ते हैं तो हमारा मन भी बापदादा के साथ ऑटोमेटेकली ही जुड़ जाता है जिससे कि उनकी याद स्वतः ही रहती है और याद के कारण हमारे विकर्म दग्ध होते है और इसी के चलते हमारी बुद्धि की जो ग्रहण शक्ति है वह बढ़ती है एवं धारणा भी स्वतः ही होती जाती है जिसके अंतिम फल स्वरूप माया को हम संपूर्ण रीति समझ जाते हैं

यह तो दुनिया में भी कहते हैं कि अगर किसी दुश्मन को जीतना है तो सबसे पहले उस दुश्मन की स्ट्रैंथ और वीकनेस - इसको जानना चाहिए अर्थात दुश्मन को जानना चाहिए अगर दुश्मन को जान लिया तो उसको हराना कोई बड़ी बात नहीं।

फिर पुजारी बनते हो। तो पहली बात है, बाप को याद करो। बाप को याद करने का अभ्यास करने से धारणा होगी। एक के साथ प्रीत नहीं है तो फिर और और के साथ लग जाती है। ऐसी-ऐसी

12/05/26 Most imp Subtle Psychology

और यह हमेशा याद रहे की जो हम खुद अपने बलबूते पर कमाते हैं वही साथ में रहता है इसीलिए मीठे बाबा कहते हैं कि अपनी घोट तो नशा चढ़े
किसी के द्वारा दिया गया कुछ भी Temporary खुशी तो देगा लेकिन वह अपनी कमाई नहीं है इसीलिए वह खुशी स्थाई नहीं रहेगी

दूसरा उदाहरण:

आजकल यह दूसरे उदाहरण वाली कैटेगरी की आत्माये ज्यादा देखने में आती हैं जिनको ज्ञान की सच्ची गहराई क्या है वो पता ही नहीं है लेकिन नाम मान शान के चक्कर में (मुझे सब पहचाने, मेरी महिमा करें आदि आदि... ) कुछ भी ज्ञान देते रहते हैं जो कि हमें बाबा से दूर करते हैं

अब सोचो कि, उनसे वो अपूर्ण देह अभियान युक्त ज्ञान हमने लिया तो उसकी result एक तो समय हमारे पास already कम है वो अमूल्य समय व्यर्थ चला गया और दूसरा कि वह अधूरा ज्ञान हमको बाबा से/लक्ष्य से ओर ही दूर ले जाएगा और इतने में ही समय समाप्त हो गया तो...? (चाहे स्वयं का शरीर छूट जाए या विनाश हो जाए - किसी भी रीति से)

***Point to ponder deeply...***

**दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।**
**मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥**

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय- ७

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है। Impossible
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

# संपूर्णता की मंजिल तक कौन पहुंच नहीं सकता अर्थात किसको धर्मराज के सामने सर झुकाना पड़ेगा।

जो ब्राह्मण आत्माए भगवान के सामने तर्क देती है वह आत्माए कुभी भी संपूर्णता की मंजिल तक नहीं पहुंच सकती फिर चाहे उसको कल्प कल्पांतर का भी समय क्यों ना मिले। वास्तव में हमारे पास तो यह संगम युग का छोटा सा समय ही है उसमें भी 90 साल से भी ज्यादा समय तो बीत चुका है।



अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना




उनमें भी वह ब्राह्मण आत्माएं जो अपनी कमी कमजोरी के कारण, अपने देह अभिमान वा अहम कार के कारण बाबा जो श्रीमत जिस संदर्भ और जिस भाव से एकदम Crystal clear कर के दे रहे है उस श्रीमत को वैसे का वैसा फॉलो नहीं कर सकती है(माया का सामना करने में अक्षम है)तो वो क्या करती है..?

उस श्रीमत को फॉलो करने के बजाय भगवान को ही, उल्टा उनके सामने, उन्होंने किसी और मुरली में, किसी और संदर्भ से, जो श्रीमत कही है उस श्रीमत का छोटा सा टुकड़ा लेकर स्वयं भगवान/महाकाल को तर्क देकर उस crystal clear श्रीमत को कट करती हैं - अपनी होशियारी/बुद्धिमानी दिखाती है और  महाकाल की श्रीमत को कट करती हैं।

अब सोचो, इन आत्माओं को क्या कहेंगे और इन आत्माओं की गति क्या होगी?